Edgar Alan Poe's
The Pit and the Pendulum
गर्त और लोलक

आदित्य श्रीवास्तव
आलोक श्रीवास्तव
आशा श्रीवास्तव

Edgar Allan Poe's

THE PIT AND THE PENDULUM.

गर्त और लोलक

हिंदी लेखन

आदित्य श्रीवास्तव

आलोक श्रीवास्तव

आशा श्रीवास्तव

गर्त और लोलक

गर्त और लोलक

Impia tortorum longas hic turba furores

Sanguinis innocui, non satiata, aluit.

Sospite nunc patria, fracto nunc funeris antro,

Mors ubi dira fuit vita salusque patent.[1]

[यह चौपाई, पेरिस के 'जैकोबियन क्लब हाउस' स्थल पर एक बाजार के फाटकों पर लगाने के लिए लिखी गयी थी]

---

[1] लैटिन अनुच्छेद जिसका अर्थ है: ‘‘इस जगह पर लम्बे समय तक दुष्ट अत्याचारियों की फ़ौज ने मासूम खून वाले लोगों के प्रति आक्रोश को संजोया था। अब यह पितृभूमि सुरक्षित है और मौत की गर्त को तबाह कर दिया गया है। जहाँ कभी भयानक मौत का राज था, अब वहाँ जीवन और आरोग्य का विस्तार है।

मैं तंग आ चुका था—उस लम्बे कष्ट से मौत की हद तक तंग आ चुका था। और काफी समय बाद जब उन्होंने मुझे बंधनमुक्त किया, और मुझे बैठने की इजाजत दी गई, तो मुझे लगा कि मेरी इन्द्रियाँ मेरा साथ छोड़ रही थीं। वह सजा—मौत की खौफनाक सजा—आखिरी स्पष्ट स्वर थी जो मेरे कानों तक पहुँची। इसके बाद, पूछताछ करने वाली आवाजों का स्वर एक स्वप्नवत अस्पष्ट भिनभिनाहट में घुल गया। इस स्वर ने मेरी रूह पर चक्कर का प्रभाव ला दिया—शायद ऐसा चक्की के पहिये की घर्र-घर्र की आवाज के उसकी कल्पना में घुल जाने से था। यह केवल थोड़े समय के लिए था; क्योंकि जल्द ही मुझे कुछ भी और सुनाई नहीं दिया। फिर भी कुछ समय तक, मैं देखता रहा; लेकिन मेरा नजरिया कितना ज्यादा बढ़ा-चढ़ाकर था! मैं काले लबादे वाले न्यायाधीशों के होंठों *को* देखता रहा। वे *होंठ* मुझे सफ़ेद दिखते थे—उस पन्ने से भी ज्यादा सफ़ेद दिखते थे, जिसपर मैं इन शब्दों को अंकित कर रहा हूँ—और विकृतता की हद तक पतले दिखते थे। वे *होंठ,* अपनी दृढ़ता के भाव की हद तक—अपने अटल संकल्प की हद तक—इंसानों पर की जाने वाली यातना की सख्त घृणा की हद तक—पतले दिखते थे[2]। मैंने देखा कि उन चीजों के अदालती हुक्म, जो मेरे लिए बर्बादी जैसे थे, अभी भी *उन होंठों* से निकल रहे थे। मैंने उन्हें[3] जानलेवा शब्द कहते हुए टेढ़ा-मेढ़ा होते देखा। मैंने उन्हें अपने नामों के अक्षरों को रूप देते देखा; और मैं काँप गया क्योंकि इसके बाद कोई और आवाज नहीं हुई। उन्मत्त खौफ के चंद पलों के दौरान, मैंने कमरे की दीवारों को ढँकने वाले सेबल[4] के पर्दों के धीमे और लगभग न महसूस होने वाले लहराने को

---

[2] न्यायाधीशों के होंठ उस हद तक पतले थे, जिस हद तक सख्त घृणा के साथ इंसानों पर यातना की जाती है।

[3] होंठों को

[4] सेबल (Sable)-एक तरह काले रंग का कपड़ा जिसका इस्तेमाल मातमी लिबास बनाने के लिए किया जाता है। यहाँ कथावाचक अपने आस-आस के माहौल में मौजूद मौत के चिह्नों को बयाँ कर रहा है।

भी देखा। और फिर मेरी नजर मेज पर रखी *सात* लम्बी *मोमबत्तियों* पर पड़ी। पहले ऐसा लगता था, जैसे उन्होंने दया का रुख धारण कर रखा हो, और वे श्वेत दुबले-पतले फरिश्तों जैसी लगती थीं, जो मुझे बचाना चाहते थे; लेकिन फिर, एकदम अचानक से ही, मेरी रूह को बहुत ज्यादा घृणा होने लगी, और मुझे अपने शरीर के रोम-रोम में एक रोमांच महसूस होने लगा, जैसे मैंने एक गैल्वेनिक बैटरी[5] का तार छू लिया हो। इस दौरान फरिश्तों की आकृतियाँ आग के सिरों वाली बेमतलब की प्रेतछायाएं बन गई, और मैंने देखा कि वहाँ मुझे उनसे कोई मदद नहीं मिलने वाली थी।[6] और इसके बाद मेरी कल्पना में, संगीत के किसी शानदार स्वर की तरह, चुपके से यह *ख्याल* आया कि कब्र में कितना सुखद आराम मिलता होगा! यह ख्याल धीरे-से और चुपके से आया, और ऐसा लगता था कि इस ख्याल को पूरी तरह सराहने में काफी समय लग गया। लेकिन काफी देर बाद, जैसे ही मेरी रूह *उसे* महसूस करने और उस पर विचार करने के लिए लौटी, मेरे सामने से न्यायाधीशों की आकृतियाँ जादू की तरह गायब हो चुकी थीं। लम्बी मोमबत्तियाँ धँस कर ख़त्म हो चुकी थीं; उनकी लपटें पूरी तरह से बुझ चुकी थीं। इसके बाद अँधेरे की कालिमा छा गई। सारी संवेदनाएं, हेडीस[7] में आत्मा की तरह, उन्मत्त भागते हुए उतराव में समा गई लगती थीं। फिर खामोशी, और स्थिरता, और अँधेरे का साम्राज्य हो गया।

---

[5] गैल्वेनिक बैटरी (Galvanic battery)-रासायनिक क्रिया से विद्युत पैदा करने वाली बैटरी।

[6] यहाँ कथावाचक मोमबत्तियों के माध्यम से अपने ऊपर चलाये जाने वाले मुकदमे का वर्णन कर रहा है। पहले उसे लगा कि जो लोग उसपर फैसला सुनाने वाले हैं, वे फरिश्तों की तरह उसपर दया करेंगे। लेकिन ज्यों-ज्यों वक्त बीतता गया उसे वे प्रेतछाया की तरह लगने लगे, जिनसे उसे कोई मदद नहीं मिलने वाली थी।

[7] हेडीस (Hades)-यूनानी किंवदंतियों के अनुसार अंधकारमय नरक जहाँ रूहें मौत के बाद जाती हैं।

मैं बेहोश हो गया था; लेकिन फिर भी मैं यह नहीं कहूँगा कि मैं अपनी सारी चेतना खो चुका था। उस चेतना में से क्या बचा था, मैं इसे परिभाषित करने की या इसका वर्णन करने की कोशिश नहीं करूंगा; लेकिन फिर भी मैंने पूरी चेतना नहीं खोई थी। सबसे गहरी नींद में—नहीं! विक्षिप्तता में—नहीं! बेहोशी में—नहीं! मौत में—नहीं! यहाँ तक कि *कब्र* में भी सब कुछ नहीं खोता है। अन्यथा इंसान के लिए कोई अमरत्व नहीं होता है। सबसे गहरी नींद से जागकर, हम किसी सपने के बारीक जाल को तोड़ते हैं। लेकिन एक पल बाद, (वह जाल इतना कमजोर रहता है कि) हमें याद नहीं रहता कि हम सपना देख रहे थे। बेहोशी से सजीवता में लौटने के दो पड़ाव होते हैं: पहला, जो मानसिक या आत्मिक इंद्रिय का होता है; दूसरा, जो भौतिक, अस्तित्व की इंद्रिय का होता है। ऐसा साध्य लगता है कि यदि दूसरे पड़ाव पर पहुँचने पर हम पहले वाले के प्रभावों को याद कर पाते, तो हम इन प्रभावों को *परलोक की गर्त* की यादों में साफ़ जाहिर पाते[8]। और यह *गर्त* है—क्या? कैसे कम-से-कम हम इसकी परछाइयों का कब्र की परछाइयों से अंतर कर सकते हैं? लेकिन यदि लम्बे अंतराल के बावजूद उस चीज (जिसको मैंने पहला पड़ाव बताया है) के प्रभाव को अपनी *मर्जी से* नहीं याद किया जा सकता है, तो क्या वे चीजें बिन बुलाए नहीं आती हैं, जिनके आने पर हम अचंभा करते हैं कि वे कहाँ से आई हैं[9]? क्या वह आदमी जो कभी बेहोश नहीं हुआ, *वो आदमी* नहीं होता, जो चमकते कोयलों में अजीब इमारतों और बहुत परिचित चेहरों को खोज लेता है! क्या वह, *वो आदमी* नहीं होता जो हवा के बीच में दुखद दृश्यों को मंडराते

[8] अर्थात यदि होश के भौतिक पड़ाव पर पहुँचने पर मानसिक या आत्मिक पड़ाव के असर को याद रखा जा सकता था, तो इंसानों को यह असर परलोक की गर्त से लौटने के उपरान्त (या पुनर्जन्म लेने पर) भी याद रहता।

[9] जिस तरह मानसिक या आत्मिक पड़ाव के असर को अपनी मर्जी से याद नहीं किया जा सकता है, उसी प्रकार अचानक याद आ जाने वाली चीजों को भी अपनी मर्जी से याद नहीं किया जाता है।

देख लेता है, जिन्हें कई लोग नहीं देख पाते हैं! क्या वह, *वो आदमी* नहीं होता है जो किसी नए फूल की सुगंध पर मनन करता है! क्या वह, *वो आदमी* नहीं होता है जिसका दिमाग किसी सुरीली लय (जिसने इससे पहले कभी भी उसका ध्यान नहीं खींचा था) के अर्थ से उलझ जाता है!

याद करने की लगातार और जानबूझकर की गई कोशिशों के बीच, अनस्तित्व जैसी लगने वाली अवस्था (जिसमें मेरी रूह चली गई थी) की किसी निशानी को जुटाने के सच्चे संघर्ष के बीच, ऐसे क्षण रहे हैं जब मैंने सफलता के सपने देखे हैं[10]; वहाँ संक्षिप्त—बहुत संक्षिप्त काल रहे हैं, जब मैंने उन *यादों* को बनाया, जिनके बारे में, बाद के समय का तर्कसंगत विवेक मुझे भरोसा दिलाता है कि वे केवल उस बेहोशी जैसी लगने वाली स्थिति से जुड़ी रही होंगी[11]। ये याददाश्त की परछाइयाँ, अस्पष्टता से, उन *लम्बी आकृतियों* के बारे में बताती हैं, जिन्होंने मुझे उठाया और ख़ामोशी से

मुझे नीचे—नीचे—और ज्यादा नीचे लेकर गईं—जब तक कि अनंत

---

[10] कथावाचक ने मौत जैसी बेहोशी से होश में आने के बाद अपनी बेहोशी के दौरान के क्षणों को याद करने की कोशिश की और इस कोशिश में उसे सफलता भी मिली।

[11] कथावाचक ने जोड़-तोड़ करके अपनी बेहोशी के दौरान के क्षण की यादों को जुटाया, जिसके बारे में सोचने पर उसे एहसास हुआ कि वह अवश्य उसकी बेहोशी से ही जुड़ी रही होंगी।

उतराव के बारे में सिर्फ सोचनेभर से होने वाली खौफनाक चकराहट, मुझे दबाने नहीं लगीं। ये परछाइयाँ मेरे दिल के किसी अंजान डर के बारे में भी बताती हैं, जो उस दिल की अस्वाभाविक स्थिरता की वजह से था। इसके बाद, सभी चीजों में अचानक गतिहीनता आ गई; मानो ऐसे कि वे जो मुझे उठाकर ले गए थे—(एक भयानक पंक्ति में!)—उतरते समय, असीमता की हद से तेजी से भागे थे और वे चीजें उनकी मेहनत की थकान की वजह से ठहर गए थीं[12]। इसके बाद, मेरे मन में समतलता और सीलन याद आती है[13]; और इसके बाद सबकुछ पागलपन जैसा है—एक ऐसी *याद* के पागलपन जैसा है, जो वर्जित चीजों में उलझी रहती है।
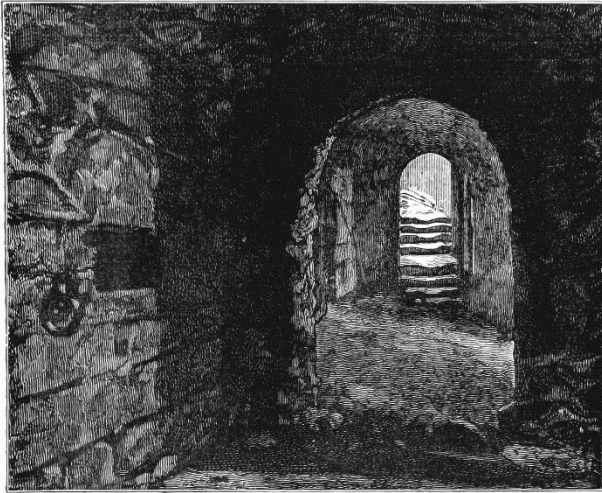
[12] कथावाचक कह रहा है कि उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसे उठाकर ले जाने वाले उस असीम उतराव की हद से तेज भागे थे, जिस वजह से आस-पास की सारी चीजें ठहरी हुई सी लगने लगी थीं।

[13] कथावाचक कह रहा है कि उसे समतल जमीन पर लिटा दिया गया जो सीलनभरी थी।

बिलकुल अचानक से मेरी रूह में हरकत और आवाज लौट आई—मेरे दिल की तीव्र गति और मेरे कानों में दिल के धड़कने की आवाज लौट आई। फिर एक विराम हुआ, जिसके बारे में मैं सबकुछ भूल गया हूँ। फिर दुबारा आवाज और हरकत हुई, और एक स्पर्श हुआ—जो मेरे शरीर में व्याप्त हो जाने वाला एक सनसनीखेज एहसास था। फिर अस्तित्व की सिर्फ *विचारहीन चेतना* रह गई—जो लम्बे समय तक टिकने वाली अवस्था थी। फिर, बिलकुल अचानक, एक *ख्याल* आया, और कंपकंपी पैदा करने वाला डर हुआ और मैंने अपनी वास्तविक अवस्था को समझने की गंभीर कोशिश की। फिर उदासीन हो जाने की प्रबल इच्छा हुई। फिर मेरी रूह तेजी से पुनः जाग्रत हो गई और मैंने हिलने की एक सफल कोशिश की। और अब मुकदमे, न्यायाधीशों, सेबल के पर्दों, दण्डादेश, खीझ और बेहोशी की पूरी स्मृति आ गई। फिर इसके बाद होने वाली सभी चीजें पूरी तरह भुला दी गईं; वे सब चीजें भुला दी गईं, जिनको मैं अगले दिन की वजह से और काफी गंभीर कोशिश की मदद से अस्पष्टता से याद करने में सक्षम हुआ हूँ।

अभी तक, मैंने अपनी आँखें नहीं खोली थी। मैंने महसूस किया कि मैं बिना बंधन के, पीठ के बल लेटा था। मैंने अपने हाथ को बढ़ाया और वह पूरे भार से किसी गीली और सख्त चीज पर गिर पड़ा। मैंने उसे[14] वहाँ कई मिनटों तक पड़े रहने देने की तकलीफ सही, इस दौरान मैंने यह कल्पना करने की कोशिश की कि मैं कहाँ हूँ और मेरे साथ क्या हो सकता है। मैं अपनी आँखों का इस्तेमाल करना चाहता था, लेकिन फिर मुझमें इसकी हिम्मत नहीं थी। मैं अपने इर्दगिर्द की चीजों पर पहली नजर डालने में डर रहा था। ऐसा नहीं था कि मुझे भयानक चीजों को देखने का डर था, बल्कि मैं यह सोचकर आतंकित हो गया था कि कहीं देखने के लिए कुछ मौजूद

[14] हाथ को

ही न हो। काफी देर बाद, दिल में घोर निराशा लिए मैंने अपनी आँखों को तेजी से खोला। इसके बाद, मेरे सबसे बदतर ख्यालों की पुष्टि हो गई। न ख़त्म होने वाली रात की कालिमा ने मुझे घेर लिया था। मैं सांस लेने के लिए संघर्ष करने लगा। ऐसा लगता था जैसे अँधेरे की प्रचंडता मुझे दबा रही हो और मेरा दम घोट रही हो। आसपास का माहौल असहनीय रूप से बंद था। मैं अभी भी चुपचाप लेटा था, और मैंने अपने विवेक का इस्तेमाल करने की कोशिश की। मैंने पूछताछ करने वाली कार्यवाहियों को याद किया, और उस बिंदु से अपनी असली स्थिति का निष्कर्ष निकालने की कोशिश की। दण्डादेश सुनाया गया था; और मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि तब से अब तक काफी लम्बा समय बीत चुका था। फिर भी, एक क्षण के लिए भी मैंने खुद को असलियत में मरा हुआ नहीं समझा था। ऐसा मान लेना, भले ही हम काल्पनिक कहानियों में कुछ भी पढ़ते हों, असल जिन्दगी से बिलकुल पृथक होता है;—लेकिन मैं कहाँ और किस स्थिति में था? मैं जानता था कि मौत की सजा पाए लोग आम तौर पर auto-da-fés[15] में

[15] auto-da-fés-यह उल्लेख इन्क्विज़िशन द्वारा घोषित विधर्मियों को सार्वजनिक स्थल पर ज़िंदा जलाये जाने की प्रथा का है। धार्मिक आडम्बर को बढ़ावा देने वाली यह प्रथा 15वीं शताब्दी से 19वीं शताब्दी के आरम्भ तक प्रचलन में थी।

मरते थे और इनमें से एक को ठीक मेरे मुकदमे वाले दिन की रात्रि को आयोजित किया गया था। क्या मुझे अगली *बलि* तक का इंतज़ार करने के लिए, मेरे अँधेरे कारागार में भेज दिया गया था, जिसे अगले कई महीनों तक नहीं होना था? यह बात मैं तुरंत समझ चुका था कि ऐसा संभव नहीं था। बलि के लिए शिकार व्यक्तियों की तुरंत जरूरत होती थी। इसके अलावा, मेरे कारागार के साथ-साथ टोलेडो[16] में स्थित सभी मुजरिमों की कोठरियों में फर्श पत्थर की थी, और रोशनी को पूरी तरह से बंद नहीं किया गया था।

अब अचानक से ही एक खौफनाक ख्याल ने मेरे दिल में खून की तेज धारा को दौड़ा दिया, और थोड़े समय के लिए मैं एक बार फिर से बेहोशी की हालत में चला गया। होश में आने पर, तुरंत ही मैं चौंककर अपने पैरों पर खड़ा हो गया। मेरा रोम-रोम बुरी तरह से काँप रहा था। मैंने पागलों की तरह अपनी बाजुओं को अपने ऊपर और इर्दगिर्द हर दिशा में फैलाया। मुझे कुछ भी महसूस नहीं हुआ; फिर भी, मुझे एक कदम चलने में भी यह डर लग रहा था कि कहीं किसी *कब्र* की दीवारें मुझे रोक न लें[17]। मेरे प्रत्येक रोम से पसीना फूट पड़ा, और शीतल बड़े मोतियों की तरह मेरे माथे पर टिक गया। आखिरकार, उधेड़-बुन की तकलीफ बढ़कर असहनीय हो गयी, और मैं, अपनी बाहें फैलाकर और किसी रोशनी की निर्बल किरण को देखने की उम्मीद से, अपनी आँखों के कोटरों पर जोर देते हुए बहुत ही सावधानी से आगे बढ़ने लगा। मैं कई कदम चला; लेकिन फिर भी हर तरफ अँधेरा और खालीपन था। अब मैं ज्यादा खुलकर सांस ले रहा था। ऐसा स्पष्ट लगता था कि मेरी किस्मत, कम-से-कम, सबसे बदतर नहीं थी।

---

[16] टोलेडो (Toledo)-स्पेन का एक शहर और टोलेडो प्रांत की राजधानी, जहाँ विधर्मियों का दमन करने के लिए संघ हुआ करता था।

[17] अर्थात कहीं कोई कदम कथावाचक को मौत के द्वार पर न पहुँचा दे।

और अब, जब मैंने फिर भी सावधानी से आगे बढ़ना जारी रखा, मेरी स्मृति में टोलेडो की वीभत्सता से सम्बंधित हजारों अफवाहों का अस्पष्ट जमावड़ा लग गया। अँधेरे कारागारों के बारे में कई *अजीब चीजें* कही गई थीं—मैं उन्हें हमेशा कहानियाँ मानता आया था—लेकिन फिर भी वे अजीब थीं, और उनको, कानाफूसी में कहने के अतिरिक्त, दोहराना बहुत ज्यादा खौफनाक था। क्या मुझे इस जमीन के नीचे की अँधेरी दुनिया में, भूख से मर जाने के लिए छोड़ दिया गया था; या न जाने कैसी किस्मत (जो शायद इससे भी ज्यादा भयानक थी) मेरा इंतज़ार कर रही थी? मुझे इसमें कोई शंका नहीं थी कि इस भयानक किस्मत का अंजाम मौत होगी, और यह मौत आम तकलीफ वाली मौत से कहीं बढ़कर होगी, क्योंकि मैं अपने न्यायाधीशों के चरित्र से बहुत अच्छे से वाकिफ था। केवल इस मौत के 'तरीके' और 'समय' ने मुझे उलझा रखा था या परेशान कर रखा था।

आखिरकार, मेरे फैले हुए हाथ किसी ठोस अवरोध से टकराए। यह एक दीवार थी, जो पत्थर से बनी मालूम होती थी—और जो बहुत ही चिकनी, चिपचिपी, और ठंडी थी। कुछ पुराने किस्सों से प्रेरित होकर, मैं पूरी सावधानी से आशंकित कदम रखते हुए उस दीवार के साथ-साथ चलता गया। लेकिन, यह तरीका मुझे कारागार की लम्बाई-चौड़ाई मालूम करने का कोई जरिया नहीं देता था। क्योंकि यह दीवार इतनी अच्छी तरह से एक-बराबर लगती थी, ऐसा हो सकता था कि मैं उसका पूरा चक्कर लगा लेता और बिना इस तथ्य को जाने मैं वापस उसी जगह पर पहुँच जाता, जहाँ से मैंने शुरूआत की थी। इसलिए मैंने उस चाकू को टटोला, जो मेरी जेब में उस समय था, जब मुझे पूछताछ-कक्ष में ले जाया जा रहा था; लेकिन अब वह गायब हो चुका था; मेरे कपड़ों को खुरदुरे *सर्ज*[18] के पहनावे से बदला जा चुका था। मैंने दीवार के मसाले के किसी छोटे-से गड्ढे में

---

[18] सर्ज (Serge)-एक तरह का मोटा ऊनी कपड़ा जिसकी तिरछी बुनाई की जाती है।

चाकू की धार को घुसेड़ने के बारे में सोचा था, ताकि मैं अपनी शुरुआत करने की जगह को पहचान सकूं। हालांकि यह समस्या केवल मामूली ही थी, लेकिन मेरी सोच की गड़बड़ी की वजह से यह शुरुआत में दुर्गम लगती थी। मैंने अपने लबादे के किनारे का एक टुकड़ा फाड़ा और उस टुकड़े को पूरी तरह फैलाकर दीवार के समकोण पर रख दिया। इस कैदखाने के चारों ओर अपना रास्ता टटोलने के दौरान, ऐसा नहीं हो सकता था कि चक्कर पूरा करने पर मेरा इस चीथड़े से सामना न हो। कम-से-कम, ऐसा मेरा विचार था। लेकिन मैंने अँधेरे कारागार के विस्तार का अथवा अपनी खुद की कमजोरी का अंदाजा नहीं लगाया था। जमीन नम और फिसलन वाली थी। मैं कुछ समय तक लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ता रहा, तभी मुझे ठोकर लगी और मैं गिर पड़ा। मेरी अत्यधिक थकान ने मुझे औंधे मुंह पड़े रहने के लिए प्रेरित किया; और जब मैं लेटा था, नींद ने मुझे अपने आगोश में ले लिया।

जागने पर, जब मैंने अपनी बांह फैलाकर अंगड़ाई ली, तो मैंने अपने समीप एक ब्रेड और पानी से भरी सुराही को पाया। मैं इस घटना के बारे में सोच-विचार करने के लिए बहुत ज्यादा थका हुआ था। बस मैंने उत्साह से खा-पी लिया। इसके शीघ्र बाद, मैंने कैदखाने के चारों ओर अपना चक्कर लगाना जारी रखा, और काफी मशक्कत करने के बाद आखिरकार मैं सर्ज के टुकड़े के पास पहुँचा। गिरने से पहले, मैंने तब तक बावन कदम गिने थे, और दुबारा चलना शुरू करने पर, मैंने अड़तालीस कदम और गिने थे—जब मैं इस चीथड़े के पास पहुँचा। इसलिए, कुल-मिलाकर मेरे द्वारा सौ कदम चले गए थे; और, अपने दो कदमों को एक गज का मानते हुए, मैंने मान लिया कि कारागार का पूरा चक्कर पचास गज का रहा होगा। लेकिन, मेरा सामना दीवार के कई कोनों से हुआ था और इसलिए मैं इस तहखाने के आकार का बिलकुल अंदाजा नहीं लगा सकता था। मैंने इसे तहखाना इसलिए कहा क्योंकि मुझे यह तहखाने के सिवाय कुछ और नहीं लगता था।

मेरी इन खोजों में *मकसद* थोड़ा ही था—और निश्चित रूप से मुझे इनमें बिलकुल *उम्मीद* नहीं थी। लेकिन एक अस्पष्ट कौतूहल, मुझे उन खोजों को जारी रखने के लिए प्रेरित करता था। मैंने दीवार को छोड़कर, इस घिरे हुए क्षेत्र के बीच में से होकर गुजरने का निश्चय किया। पहले, मैं बहुत ही सावधानी से आगे बढ़ा, क्योंकि फर्श, जो हालांकि काफी ठोस चीज की बनी लगती थी, चिपचिपे पदार्थ की वजह से भरोसेमंद नहीं रह गई थी। लेकिन, काफी देर बाद, मैंने हिम्मत जुटाई और मैं दृढ़तापूर्वक आगे कदम बढ़ाने में बिलकुल नहीं हिचकिचाया—और मैंने यथासंभव सीधी रेखा में जाने का प्रयास किया। इस तरह से मैं कुछ दस या बारह कदम आगे बढ़ा था, जब मेरे लबादे के फाड़े गए किनारे का टुकड़ा, मेरे पैरों के बीच में उलझ गया। मैंने उसपर कदम रखा और जोर से अपने मुंह के बल गिर पड़ा।

गिरने से होने वाली हैरानी में, मैं एक थोड़ी चौंकाने वाली घटना को फौरन समझ नहीं पाया, जिसने आखिरकार—कुछ पलों बाद और जब मैं औंधें मुंह गिरा हुआ था—मेरा ध्यान आकर्षित कर लिया। यह घटना ऐसी थी: मेरी ठुड्डी कैदखाने की फर्श पर पड़ी हुयी थी, लेकिन मेरा होंठ और मेरे सिर का ऊपरी हिस्सा (जो यद्यपि ठुड्डी से कम ऊँचाई पर लगता था) किसी भी चीज से नहीं छुआया। इसी के साथ-साथ, ऐसा लगता था जैसे मेरा माथा चिपचिपी भाप से नहा गया हो, और सड़ी हुयी फफूँदी की एक खास बदबू मेरे नथुनों में आने लगी। मैंने अपनी बाँह आगे बढ़ाई, और यह जानकर काँप उठा कि मैं एक गोलाकार गड्ढे के बिलकुल किनारे पर गिरा हुआ था। निश्चित रूप से, उस क्षण मेरे पास उस गड्ढे के विस्तार को जानने का कोई भी जरिया नहीं था। गड्ढे के किनारे के ठीक नीचे, चूने-गारे के निर्माण को चारों ओर टटोलकर, मैं एक छोटे से टुकड़े को निकालने में सफल हुआ और मैंने इसे नीचे गर्त में गिर जाने दिया। कई क्षणों तक, मैं उस टुकड़े के गड्ढे में गिरने से अगल-बगल टकराकर होने वाली गूँज की आवाज को ध्यान से सुनता रहा। काफी देर बाद, पानी में छपाक की दबी

हुई आवाज सुनाई दी, जिसके बाद तेज प्रतिध्वनियाँ सुनाई दीं। उसी क्षण, ऊपर से एक दरवाजे के तेजी से खुलने और उतनी ही तेजी से बंद होने जैसी आवाज आई। उसी दौरान, रोशनी की एक निर्बल किरण उस अँधेरे में अचानक चमकी और अचानक ही गायब हो गयी।

मैंने स्पष्ट रूप से उस मौत को देखा जिसे मेरे लिए तैयार किया गया था, और मैंने खुद को वक्त रहते होने वाले संयोग[19] के लिए भी बधाई दी, जिसकी वजह से मैं बचा था। मैंने गिरने से पहले यदि एक और कदम लिया होता, तो मैं दुनिया में जिन्दा नहीं रहता। और वह मौत, जिससे मैं अभी-अभी बचा था, बिलकुल उसी तरह की थी, जिस तरह की मौत को मैं इन्क्विजिशन[20] से जुड़ी कहानियों में काल्पनिक और फर्जी समझता आया था। इस इन्क्विजिशन के जुल्म के शिकार व्यक्तियों के पास विकल्प में 'सबसे भीषण शारीरिक कष्ट वाली मौत' अथवा 'सबसे भयानक मानसिक खौफ से होने वाली मौत' हुआ करती थी। मेरे लिए दूसरी वाली मौत तय की गई थी। लम्बे समय तक तकलीफ सहने के कारण मेरी हिम्मत इतनी टूट चुकी थी कि मैं अपनी खुद की आवाज से कांपने लग गया था, और हर लिहाज से उस श्रेणी की *यातना*[21] के लिए उपयुक्त विषय बन गया था, जो मेरा इंतजार कर रही थी।

जब मैंने टटोलते हुए दीवार की ओर वापस रुख किया, तो मेरा हर अंग काँप रहा था। उन कुओं (जिनको मैंने अपनी कल्पना में कारागार की कई अलग-अलग जगहों पर होने के बारे में सोचा था) के खौफ का जोखिम लेने की बजाय मैंने वहीं दीवार के पास मरने का निश्चय कर लिया था। अन्य

---

[19] कथावाचक के पैरों में कपड़े के टुकड़े का उलझना।

[20] इन्क्विज़िशन (Inquisition)-मध्यकाल में विधर्मियों को खोजने और दण्डित करने के लिए बनाई गई ईसाई धर्म की धार्मिक ट्रिब्यूनल, जो अपनी क्रूर कार्यवाहियों के लिए जानी जाती थी।

[21] भयानक मानसिक खौफ से होने वाली मौत

मानसिक परिस्थितियों में, मुझमें इन गड्ढों में से किसी एक में कूदकर एक झटके से अपनी तकलीफ को ख़त्म करने की हिम्मत हो सकती थी; लेकिन अब मैं बहुत ज्यादा कायर बन चुका था। मैं इन गड्ढ़ों के बारे में पढ़ी गई बात को भी नहीं भूल सकता था—जो यह थी कि जिन्दगी को अचानक ख़त्म कर देना, उन *इन्क्विज़िटर्स*[22] की अति भयावह योजना का हिस्सा नहीं था।

रूह की बेचैनी ने मुझे कई घंटों तक जगाये रखा, लेकिन आखिरकार मुझे फिर से झपकी लग गई। जागने पर, पहले की ही तरह, मैंने अपने बगल में एक ब्रेड और पानी की एक सुराही को रखा हुआ पाया। प्यास की जलन मुझपर हावी हो गई थी, और मैंने पानी के बर्तन को एक ही घूँट में खाली कर दिया। अवश्य ही उसमें बेहोशी की दवा मिलाई गयी होगी- क्योंकि जैसे ही मैंने इसे पीया, मैं बेकाबू होकर ऊंघने लगा। एक गहरी नींद मुझ पर हावी हो गयी—एक नींद जो मौत जैसी थी। यह कितनी देर तक टिकी रही, बेशक मैं नहीं जानता; लेकिन जब, एक बार फिर से, मैंने अपनी आँखों को खोला, मैं अपने इर्द-गिर्द की चीजों को देख सकता था। एक तीव्र *नारकीय* चमक (जिसके स्रोत का पहले मैं अंदाजा नहीं लगा सका था) द्वारा मैं कैदखाने के विस्तार और स्वरूप को देखने में सक्षम हो गया था।

इसके आकार के बारे में मैंने बहुत गलत अंदाजा लगाया था। इसकी दीवारों का कुल परिपथ पच्चीस गज से ज्यादा नहीं था। कुछ मिनटों तक, यह तथ्य मुझे फ़िज़ूल की तकलीफ की दुनिया में ले गया था। वाकई में, यह फ़िज़ूल की तकलीफ थी—क्योंकि मुझे घेरने वाली इन खौफनाक परिस्थितियों में, मेरे लिए कारागार की महज लम्बाई-चौड़ाई से ज्यादा महत्वहीन क्या हो सकता था? लेकिन, मेरे मन ने इन निरर्थक बातों में बहुत

---

[22] इन्क्विज़िटर्स (Inquisitors)-विधर्मियों को खोजने और दण्डित करने वाले अधिकारी, जिन्हें 13वीं शताब्दी में पहली बार दक्षिण फ्रांस में भेजा गया था।

रुचि ली थी, और मैंने अपनी माप की गड़बड़ी को समझने की कोशिश में, खुद को व्यस्त कर लिया। काफी देर बाद, सच्चाई मेरे दिमाग में कौंधी। गिरने से पहले, मैंने खोज करने की अपनी पहली कोशिश में बावन कदम गिने थे। तब, मैं उस कपड़े के टुकड़े के एक या दो कदम के दायरे में रहा हूँगा। असल में, मैंने उस तहखाने के चक्कर को लगभग पूरा कर लिया था। उसके बाद मैं सो गया था—और जागने पर, मैं उलटे कदम वापस लौट गया हूँगा। इस तरह, मैंने चक्कर को उसकी वास्तविक लम्बाई का दोगुना समझ लिया होगा। अपने दिमाग की उलझन की वजह से मैं इस बात पर गौर नहीं कर पाया था कि मैंने अपने *सफर* की शुरुआत दीवार की बायीं तरफ से की थी, और उसका अंत दीवार की दाहिनी तरफ किया था।

मुझे घेराव के आकार के बारे में भी धोखा हुआ था। अपने रास्ते को टटोलते हुए, मैंने कई कोनों को पाया था, और इसलिए मैंने उसके बहुत बेढंगे होने का निष्कर्ष निकाला था। ऊंघ अथवा नींद से जागे हुए व्यक्ति पर, घुप्प अँधेरे का असर इतना प्रबल होता है! ये कोने केवल विभिन्न अंतरालों पर स्थित धँसी हुई जगहों अथवा गड्ढों के थे। कारागार का सामान्य आकार वर्गाकार था। जिसे मैंने चूने-गारे का निर्माण समझा था, अब वह देखने में लोहे या किसी और धातु की बड़ी चादरों से बना हुआ लगता था, जिनके टाँकों या जोड़ों में कहीं-कहीं गड्ढे हो गए थे। धातु के बने इस घेराव की पूरी सतह, बेढंगे तरीके से हर तरह के डरावने और घृणित चिह्नों से पुती थी, जिनसे मठवासियों के कब्रिस्तान-सम्बन्धी अंधविश्वासों को बढ़ावा मिला है। कंकालों जैसे स्वरूप वाली हैवानों की *आकृतियाँ* नुकसान पहुँचाने की मुद्रा में थीं। और इसके अलावा अन्य अत्यंत डरावनी आकृतियाँ भी दीवारों पर फैली हुयी थीं और दीवारों के रूप को बिगाड़ती थी। मैंने देखा कि इन हैवानी जीवों की आकृतियाँ काफी साफ़ थी। लेकिन उनके रंग फीके और धुंधले पड़ गए थे, जैसा सीलन भरे वातावरण के प्रभाव से होता है। अब मैंने फर्श पर भी गौर किया, जो पत्थर की बनी थी।

इसके मध्य में, उस गोलाकार गड्ढे का खुला हुआ मुंह था जिसके जबड़ों से मैं बच निकला था; लेकिन यह इस कारागार में अकेला गड्ढा था।

यह सब मुझे अस्पष्टता से और बहुत मशक्कत करने पर दिखा—क्योंकि नींद के दौरान मेरी खुद की हालत में काफी बदलाव आ चुका था। इस समय, मैं पैर फैलाकर अपनी पीठ के बल एक तरह के लकड़ी के ढाँचे पर लेटा हुआ था, जो कम ऊँचाई वाला था। इस लकड़ी के ढाँचे से मुझे एक लम्बे पट्टे द्वारा कसकर बाँधा गया था, जो सरसिंगल[23] जैसा दिखता था। इस पट्टे को मेरे अंगों और शरीर के इर्दगिर्द कई बार घुमाकर बांधा गया था, जिससे सिर्फ मेरा सिर और मेरी बायीं बाजू इतने आजाद रह गए थे कि मैं काफी मशक्कत से खुद को फर्श पर मेरे बगल में रखी मिट्टी की तश्तरी के खाने को खिला सकता था। मुझे सदमा लगा, जब मैंने देखा कि सुराही को हटा दिया गया था। मैंने "मुझे सदमा लगा" इसलिए कहा—क्योंकि मैं असहनीय प्यास से मरा जा रहा था। यह प्यास, मुझपर जुल्म करने वाले लोगों द्वारा मुझे जगाने के लिए बनाई गई योजना लगती थी—क्योंकि तश्तरी में रखा हुआ खाना तीखे मसाले वाला गोश्त था।

ऊपर देखते हुए, मैंने अपने कैदखाने की भीतरी छत का निरीक्षण किया। यह मेरे सिर से लगभग तीस या चालीस फीट ऊपर थी, और काफी हद तक बगल की दीवारों की तरह बनी हुयी थी। इसकी एक फलक में बनी एक बहुत ही अनोखी आकृति ने मेरा सारा ध्यान आकर्षित कर लिया। यह 'वक्त' की रंगी हुई आकृति थी, जैसे उसे आमतौर पर दिखाया जाता है। सरसरी निगाह से देखने पर, मुझे लगा उसने दराँती[24] की बजाय *किसी चीज को* पकड़ रखा था, जो मुझे एक विशाल लोलक की चित्रित तस्वीर जैसी

---

[23] सरसिंगल (Surcingle)- एक बेल्ट,बैंड या कसनी जिसे घोड़े की पीठ पर सामान लादने के लिए या जीन चढ़ाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

[24] वक्त को अकसर हाथ में फसल काटने वाली दराँती लिए हुए दिखाया जाता है।

लगी। लोलक की तस्वीर वैसी ही थी, जैसी हम पुराने जमाने की घड़ियों में देखते हैं। हालांकि, इस मशीन के रूप में ऐसा कुछ था, जिसने मुझे उसको और ज्यादा गौर से देखने पर मजबूर कर दिया। जब मैंने सीधे ऊपर इसकी तरफ गौर से देखा (क्योंकि यह ठीक मेरे ऊपर ही स्थित थी) तो मुझे आभास हुआ मानो मैंने इसे हिलते देखा हो। इसके बाद, एक ही क्षण में मेरे आभास की पुष्टि हो गई। यह लोलक थोड़ा ही घूम रहा था, और निश्चित रूप से यह बहुत सुस्त था। मैंने थोड़े भय से (लेकिन उससे कहीं ज्यादा अचंभे से) इस लोलक को कुछ मिनटों तक देखा। काफी देर तक इसकी सुस्त गति को देखने की वजह से मुझे ऊब महसूस होने लगी थी, जिस वजह से मैंने अपनी आँखों को कैदखाने में रखी गयी अन्य चीजों की तरफ घुमा लिया।

एक हलके शोर ने अपनी तरफ मेरा ध्यान आकर्षित कर लिया और *फर्श* की तरफ देखने पर मैंने अनेक बड़े चूहों को उसपर गुजरते हुए देखा। वे चूहे उस *कुएं* से बाहर निकले थे, जो दाहिनी तरफ मेरी निगाह में मुश्किल से आता था। जब मैं उन्हें घूर रहा था, तब भी वे गोश्त की खुशबू से ललचाई भूखी निगाहों के साथ तेजी से झुण्ड में आते ही जा रहे थे। यहाँ से उन्हें डराकर भगाने के लिए बहुत ज्यादा कोशिश और सावधानी की जरूरत थी।

इससे पहले कि मैं अपनी आँखों को फिर से ऊपर उठाकर देखता, लगभग आधे घंटे, या शायद एक घंटे बीते रहे होंगे (मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि मैं समय का केवल त्रुटिपूर्ण अंदाजा ही लगा सकता था) । इसके बाद, मैंने जो कुछ देखा, उससे मैं अवाक और चकित रह गया। लोलक के घूर्णन का फैलाव लगभग एक गज की दूरी तक बढ़ गया था। और इसका स्वाभाविक परिणाम यह था कि इसकी गति भी काफी अधिक बढ़ गयी थी। लेकिन जिस बात ने मुझे मुख्य रूप से परेशान कर दिया था वह यह थी कि यह लोलक स्पष्ट रूप से नीचे आ गया था। अब मैंने देखा—

किस तरह के खौफ के साथ, यह बताने की आवश्यकता नहीं है—कि इसका *निचला सिरा,* शानदार चमक वाले स्टील का क्रेसेंट[25] था, जिसकी एक चन्द्रशिखा से दूसरी चन्द्रशिखा की लम्बाई लगभग एक फुट की थी; इसकी चन्द्रशिखाएं ऊपर की तरफ थीं, और निचले भाग का किनारा स्पष्ट रूप से उतना ही धारदार था, जितना किसी रेज़र[26] का होता है। और एक रेजर की तरह ही, यह ठोस और भारी दिखाई देता था, और धार से चौड़ा होकर, ऊपर एक ठोस और चौड़े निर्माण को बनाता था। यह पीतल की एक

भारी छड़ से जुड़ा था, और यह पूरा निर्माण हवा में झूलते हुए सांय-सांय कर रहा था।

[25] क्रेसेंट (crescent)-नवचन्द्र की आकृति की कोई चीज

[26] रेज़र (razor)- उस्तरा

अब मुझे इस बात का तनिक भी संदेह नहीं रह गया था कि मेरी मौत की तैयारी, यातना में माहिर मठवासियों द्वारा की गयी थी। *इन्क्विज़िटर्स* को पता लग चुका था कि मैं *गड्ढे* के बारे में जानता हूँ—*उस गड्ढे* के बारे में, जिसकी दहशत को मुझ जैसे धृष्ट रेकुज़ेन्ट[27] के लिए निर्धारित किया गया था—*उस गड्ढे* के बारे में, जो नर्क का प्रतीक था और जो अफवाह में उनके सभी तरह के दण्डों में 'अल्टिमा थ्यूली[28]' माना जाता था। बिलकुल संयोगवश, मैं इस गड्ढे में गिरने से बचा था और मैं जानता था कि यंत्रणा में 'हैरान हो जाना' या 'फंस जाना', इन कारागारों में होने वाली मौतों की सारी वीभत्सता का ख़ास हिस्सा था। मुझे गड्ढे में गिराने में नाकाम होने के बाद ,मुझे उसी गर्त में धकेलना उनकी शैतानी योजना का बिलकुल हिस्सा नहीं था और इसलिए (क्योंकि वहाँ कोई अन्य विकल्प नहीं था) एक भिन्न और *आसान* मौत मेरा इंतजार कर रही थी[29]। *आसान!* जब मैंने इस शब्द के ऐसे इस्तेमाल के बारे में सोचा, तो मैं अपनी व्यथा में आधा मुस्करा पड़ा।

मौत से ज्यादा खौफनाक उन लम्बे-लम्बे घंटों के बारे में बात करने से क्या फायदा, जिनमें मैंने उस स्टील के हथियार के तेज दोलन की गिनती की थी! इंच-इंच करके, पंक्ति-पंक्ति करके, वह स्टील का हथियार युगों जैसे

---

[27] रेकुज़ेन्ट (recusant)-कोई रोमन कैथोलिक व्यक्ति जिसने इंग्लैंड की चर्च की सेवा में काम करने से मना कर दिया हो। यहाँ इसका आशय 'विधर्मी' से है।

[28] अल्टिमा थ्यूली (Ultima Thule)- चरम बिंदु

[29] कथावाचक कह रहा है कि इन्क्विज़िटर्स चाहते थे कि कथावाचक अपनी मौत से पहले, यातना से हैरान हो जाये या यातना के लिए बिछाए जाल में फंस जाए, क्योंकि यही हैरानी या उलझन उनकी यातना को वीभत्स बनाती थी। लेकिन अब जब कथावाचक कारागार में उस गड्ढे की मौजूदगी से वाकिफ हो गया था, तो इन्क्विज़िटर्स के पास कोई वजह नहीं थी कि वे कथावाचक को गड्ढे में धकेलें। इसलिए उन्होंने उसके लिए धारदार लोलक के रूप में यह 'आसान' मौत तैयार की थी, जिसे वह प्रत्येक क्षण अपने करीब आते देख रहा था।

लम्बे अंतरालों पर दिखने वाले *उतराव* के साथ उतरता गया—लगातार नीचे और नीचे आता गया! इससे पहले कि वह मेरे इतने करीब झूलने लगता कि वह पंखे की तरह मुझपर अपनी *पैनी* हवा झालने लगता—दिन गुजर गए—ऐसा भी हो सकता था कि *कई* दिन गुजर गए हों। उस धारदार स्टील के हथियार की गंध, जबरन मेरे नथुनों में घुस आई। मैं प्रार्थना करने लगा—मैंने, उस स्टील के हथियार को और गति से नीचे भेजने की, अपनी प्रार्थना से ईश्वर को तंग कर दिया। मैं व्यग्रता से पागल हुआ जा रहा था, और मैं खुद को बलपूर्वक उठाकर उस भयानक शंशेरी[30] के लहराने की दिशा से दूर करने के लिए जूझने लगा। और फिर मैं अचानक ही गिरकर शांत हो गया, और लेटे-लेटे ही चमचमाती हुयी मौत पर मुस्कराने लगा, जैसे कि एक बच्चा किसी अनोखे खिलौने को देखकर हंसता है।

पुनः एक *अंतराल* आया, जब मैं बिलकुल उदासीन हो गया। यह *अंतराल* छोटा ही था; क्योंकि मेरे दुबारा सक्रिय होने पर, ऐसा प्रतीत होता था कि लोलक बिलकुल नीचे नहीं आया था। लेकिन हो सकता है यह अंतराल लम्बा रहा हो—क्योंकि मैं जानता था कि वहाँ शैतान[31] मौजूद थे, जो मेरी निष्क्रियता पर गौर कर रहे थे, और वे लोलक के हिलने की गति को इच्छानुसार रोक सकते थे। इस उदासीनता से संभलने के बाद भी, मैंने बहुत ही—ओह! मैं बता नहीं सकता—बीमार और कमजोर महसूस किया, जैसा लम्बी भुखमरी से होता है। उस वक्त की व्यथा के दौरान भी मेरी मानवीय प्रवृत्ति को खाना खाने की इच्छा थी। मैंने तकलीफदेह कोशिश से अपनी बायीं बांह को वहाँ तक बढ़ाया, जहाँ तक मेरे बंधन मुझे जाने की इजाजत देते थे और उस बचे हुए टुकड़े को अपने कब्जे में ले लिया, जिसे चूहों ने मेरे लिए छोड़ दिया था। जब मैंने उसका आधा हिस्सा अपने होंठों में डाला, मेरे दिमाग में ख़ुशी का—उम्मीद का—एक अर्ध-

---

[30] धारदार हथियार के लिए अलंकार

[31] इन्क्विज़िटर्स

निर्मित ख्याल कौंध गया। लेकिन, मुझे उम्मीद से क्या लेना-देना था? जैसा मैंने कहा, यह एक अर्ध-निर्मित ख्याल था। इंसान को ऐसे कई ख्याल आते हैं, जो कभी भी पूरे नहीं होते। मुझे लगा यह ख़ुशी का ख्याल था—यह उम्मीद का ख्याल था। लेकिन मुझे यह भी लगा कि यह ख्याल अपने निर्माण के समय ही ख़त्म हो गया था। मैंने इसे पूरा करने की—दुबारा हासिल करने की व्यर्थ कोशिश की। लम्बी तकलीफ झेलने कि वजह से मेरे दिमाग की लगभग सारी सामान्य शक्तियाँ नष्ट हो चुकी थीं। अब मैं एक बेवकूफ बन चुका था—एक मूर्ख बन चुका था।

लोलक मेरी लम्बाई के समकोण झूल रहा था। मैंने देखा कि क्रेसेंट को ऐसे लटकाया गया था कि वह मेरे दिल के इलाके के पार चला जाए। वह मेरे लबादे के कपड़े को उधेड़ने वाला था—वह वापस लौट कर नीचे आने वाला था और अपने काम को दोहराने वाला था—बार-बार और लगातार। वह लोलक, अपने 'अत्यधिक चौड़े घुमाव' (जो कुछ तीस फीट या उससे अधिक था) और अपने 'नीचे उतरने की सरसराती प्रचंडता' (जो इन लोहे की दीवारों को काटने के लिए पर्याप्त थी) के बावजूद भी, अभी भी कई मिनटों तक, सिर्फ मेरे लबादे को उधेड़ने का काम ही कर सकता था[32]। और इसी ख्याल पर मैं ठहर गया। इस ख्याल से आगे सोचने की मुझमें हिम्मत नहीं हुई। मैंने दृढ़तापूर्वक अपने ध्यान को यहीं पर ठहरा लिया—मानो, इस तरह इस ख्याल पर ठहरने से, मैं स्टील के हथियार को उतरने से *यहीं पर* रोक लूँगा। मैंने खुद को उस *आवाज* के बारे में सोचने पर मजबूर किया, जो उस क्रेसेंट के मेरे कपड़े के पार हो जाने पर होने वाली थी—मैंने खुद को उस अनोखे रोमांचक एहसास के बारे में सोचने पर मजबूर किया, जो कपड़े के नसों से रगड़ने पर पैदा होता है। मैं इन सारी फालतू बातों के बारे में सोचता रहा, जब तक कि मेरे दाँत डर से किटकिटाने नहीं लगे।

---

[32] क्योंकि इस लोलक के नीचे आने की गति बहुत सुस्त थी।

नीचे—वह लगातार नीचे सरकता गया। मुझे उसकी नीचे आने की गति और उसके दाएँ-बाएँ झूलने की गति के बीच में अंतर करने में, पागलों जैसा आनंद महसूस हो रहा था। वह लोलक, एक पापी रूह जैसी चीत्कार के साथ—दाहिनी तरफ—बायीं तरफ—दूर तक और विस्तार से झूल रहा था! वह लोलक मेरे दिल की तरफ, छिपकर चलने वाले बाघ की गति से आ रहा था! मैं बारी-बारी से कभी हंसने और कभी चीखने लगता, जब एक ख्याल या दूसरा ख्याल मुझपर हावी होने लगता।

नीचे—निस्संदेह, वह लगातार नीचे आता गया! वह मेरे दिल से तीन इंच से भी कम दूरी पर झूल रहा था! मैंने अपनी बायीं भुजा को आजाद करने की भरसक—भीषण—कोशिश की। यह केवल कुहनी से लेकर हाथ तक आजाद थी। मैं बहुत मशक्कत से अपने हाथ को, अपने समीप रखी कठौती[33] से अपने मुंह तक ले जा सकता था, लेकिन इसे उससे आगे नहीं ले जा सकता था। यदि मैं कुहनी से ऊपर के बंधन को तोड़ पाता, तो मैं लोलक को पकड़ने और उसे रोकने की कोशिश कर सकता था। मैं तो ऐवलैंच[34] को भी रोकने की कोशिश कर सकता था!

नीचे—वह अभी भी लगातार—अभी भी अपेक्षित ढंग से नीचे आता गया! मैं हर दोलन पर हांफने लगता और हाथ-पैर मारने लगता। मैं उसके हर घुमाव पर झटके से सहम जाया करता। मेरी आँखें, बिलकुल बेमतलब की निराशा से होने वाले कौतूहल से, बाहर या ऊपर जाते उसके घुमाव का पीछा करतीं[35]; वे रह-रहकर उस लोलक के नीचे उतरने पर बंद हो जाया करतीं, यद्यपि मौत राहत देने वाली होती। ओह, इसे बयाँ करना कितना

[33] खाना कठौती में रखा था।

[34] ऐवलैंच (avalanche)- पहाड़ से गिरता हुआ बर्फ का ढेर

[35] कथावाचक कह रहा है कि जैसे कोई निराश आदमी बिना किसी वजह के उत्सुकता से चीजों को देखता है, उसी तरह कथावाचक उस झूलते हुए लोलक को बाहर की ओर जाते हुए अथवा ऊपर की ओर जाते हुए देख रहा था।

मुश्किल है! अभी भी, मेरी हर नस यह सोचकर काँप रही थी कि उस मशीन के कितना जरा-सा नीचे धँसने से वह पैनी, चमचमाती *कुल्हाड़ी*[36] मेरी छाती पर आ गिरेगी। यह मशीन के धँसने की उम्मीद थी, जिसने मेरी नसों में कंपकंपी पैदा कर दी थी[37]। यह उम्मीद थी—वह उम्मीद, जो तकलीफ पर फतह पाती है और जो *इन्क्विजिशन* की कालकोठरियों में भी, मौत की सजा पाए लोगों से कानाफूसी करती है।

मैं देख सकता था कि कुछ दस या बारह बार झूलकर, स्टील का हथियार मेरे लबादे के वास्तविक संपर्क में आ जाएगा—और इस बात पर गौर करने से, मेरी रूह में अचानक ही निराशा की शान्ति छा गई, जो बिलकुल तीक्ष्ण और नियंत्रित थी। कई घंटों में—या शायद दिनों में—मैंने पहली बार सोचने का काम किया था। अब मुझे यह बात सूझी कि यह बंधन, या *सरसिंगल*, जिसने मुझे लपेट रखा था, बहुत ही ख़ास था। मुझे अलग से किसी भी रस्सी से नहीं बाँधा गया था। पट्टे के किसी भी हिस्से पर, रेजर जैसे *क्रेसेंट* का सिर्फ एक वार आड़े-तिरछे पड़ने से, यह पट्टा इस तरह से अलग हो जाता कि मैं खुद को अपने बाएं हाथ की मदद से बंधनमुक्त कर सकता था। लेकिन उस दशा में, उस स्टील के हथियार की नजदीकी कितनी भयावह होती! तनिक भी संघर्ष करने का नतीजा, कितना जानलेवा हो सकता था! इसके अलावा, क्या ऐसा सम्भव था कि उस जालिम[38] के वफादारों[39] ने इस संभावना का पहले से अंदाजा लगाकर इंतजाम न किया हो? क्या ऐसा सम्भव था कि यह पट्टा, इस लोलक के पथ पर मेरी छाती से गुजरता था[40]?

---

[36] स्टील के हथियार के लिए अलंकार

[37] कथावाचक उम्मीद कर रहा है कि उसे जल्दी से मौत आ जाए

[38] झूलते हुए स्टील के हथियार के लिए अलंकार

[39] इन्क्विज़िटर्स के लिए अलंकार

[40] कथावाचक कह रहा है यदि वह पट्टा, लोलक के नीचे आने के पथ पर, उसकी छाती को नहीं लपेटता था तो उसकी मौत निश्चित थी।

अपनी हलकी (और प्रकटतः अपनी आखिरी) उम्मीद के व्यर्थ होने के भय से, मैंने अपने सिर को इतना ऊपर उठाया कि मैं अपनी छाती पर एक साफ़ नज़र डाल सकूं। विनाशकारी क्रेसेंट के पथ को छोड़कर, *सरसिंगल* ने मेरे अंगों को और मेरे शरीर को सभी दिशाओं से बाँध रखा था।

मुश्किल से ही मैंने अपने सिर को उसकी आरंभिक स्थिति में वापस गिराया रहा होगा, जब मेरे दिमाग में एक विचार कौंधा, जिसको मैं "बचाव के आधे अनिर्मित विचार" से बेहतर नहीं समझा सकता हूँ। इसका मैं पहले उल्लेख कर चुका हूँ, और इसका अस्पष्ट अंश मेरे दिमाग में तब आया था, जब मैंने अपने भूख से सुलगते होंठों की ओर, खाने को उठाया था। अब *पूरा* विचार बन चुका था। यह विचार क्षीण था—मुश्किल से तर्कसंगत था—शायद ही स्पष्ट था—लेकिन फिर भी यह विचार *पूरा* था। निराशा के भयावह प्रभाव से, मैंने फौरन इस विचार को अमल में लाने की कोशिश की।

कई घंटों से, उस कम ऊँचाई वाले ढाँचे—जिसपर मैं पड़ा था—के बिलकुल करीब चूहे वाकई बड़ी तादाद में घूम रहे थे। वे जंगली, धृष्ट और भूखे थे—उनकी लाल आँखें मुझे घूरे जा रही थीं मानो वे मुझे अपना शिकार बनाने के लिए, सिर्फ मेरे अचल हो जाने का इंतजार कर रहे हों। मैं सोचने लगा, “इस कुएँ में इनको किस तरह का खाना खाने की आदत होगी?”

उनको रोकने के मेरे सारे प्रयासों के बावजूद, उन्होंने तश्तरी में बचे हुए थोड़े से अवशेष के अतिरिक्त, सारी चीजों को खा लिया था। मुझे कठौती के इर्दगिर्द हाथ को हाँकने या लहराने की आदत पड़ गई थी और बाद में,

इस हरकत की *बेखबर समानता* ने इसका असर ख़त्म कर दिया था[41]। अपनी भूख की वजह से, मुझे तंग करने वाले ये जीव बार-बार अपने नुकीले दांतों को मेरी अँगुलियों पर गड़ा दिया करते थे। तैलीय और मसालेदार खाने के अब बचे हुए कणों को, जहाँ तक मैं पट्टे पर पहुँच सकता था, मैंने मल दिया; फिर अपने हाथ को फर्श से उठाकर, मैं सांस रोके चुपचाप स्थिर लेटा रहा।

शुरुआत में, वे भूखे जीव मेरी हरकत के रुकने पर चौंक गये और इस परिवर्तन को देखकर भयभीत हो गये। वे आशंकित होकर सहम गए; कई तो कुएं में चले गये। लेकिन यह केवल क्षणिक था। मेरा उनके भुक्खड़पन के बारे में अंदाजा लगाना व्यर्थ नहीं था। यह देखकर कि मैं निश्चल होकर रुक गया था, उनमें से एक या दो सबसे साहसी चूहों ने उस ढाँचे पर छलांग लगाई, और वे *सरसिंगल* को सूंघने लगे। यह सभी के लिए तेजी से आने का इशारा लगता था। उनका नया दस्ता कुएँ से निकलकर तेजी से भागता हुआ आया। वे लकड़ी के ढाँचे से चिपक गये—वे उसपर फ़ैल गए, और वे सैकड़ों की तादाद में मुझपर कूद पड़े। लोलक की तालबद्ध गति से वे बिलकुल भी विचलित नहीं हुए। उस लोलक के वारों को बचाते हुए, वे खुद तेल लगे पट्टे पर कार्यरत हो गए। वे मुझे अपनी लगातार बढ़ती भीड़ से दबाने लगे—तांता लगाने लगे। वे मेरी गर्दन पर कसमसाने लगे; उनके सर्द होंठ मेरे मुंह की तलाश कर रहे थे; मैं उनकी भीड़ के दबाव से आधा दब चुका था। घृणा— जिसके लिए दुनिया में कोई शब्द नहीं है, मेरी छाती में उठ रही थी और मेरे दिल को भारी नमी से उदास कर रही थी। आखिर में एक मिनट बीता, और मुझे लगा कि यह संघर्ष ख़त्म हो जाएगा। स्पष्ट रूप से, मैंने पट्टे को ढीला होते महसूस किया। मैं जानता था कि एक से

---

[41] कथावाचक चूहों को भगाने के लिए, बेखबर होकर अपने हाथ को बार-बार एक ही ढंग से हिला रहा था, जिस वजह से चूहों पर उसके हाथ हिलाने का असर होना बंद हो गया।

ज्यादा जगहों पर यह पहले से ही अलग हो चुका होगा। मैं अतिमानवीय संकल्प के साथ स्थिर पड़ा रहा।

न ही मेरी गणना में मुझसे कोई भूल हुयी थी—न ही मेरा यह सब बर्दाश्त करना फ़िज़ूल गया। काफी देर बाद मुझे महसूस हुआ कि मैं आजाद हो गया था। यह *सरसिंगल* मेरे शरीर से रिबन की तरह लटका हुआ था। लेकिन लोलक का झूलना मेरी छाती को पहले से ही दबा रहा था। इसने मेरे लबादे के *सर्ज* को विभाजित कर दिया था। यह उसके नीचे के लिनेन[42] को भी काटकर पार हो गया था। यह दो बार फिर से झूला, और एक तेज पीड़ा का एहसास मेरी हर नस में दौड़ गया। लेकिन बच निकलने का क्षण आ चुका था। मेरे द्वारा अपने हाथ के हिलाने पर मेरे मुक्तिदाता[43] तेजी से हलचल करते हुए भाग गये। स्थाई गति से—सतर्कतापूर्वक, तिरछी दिशा में, सिकुड़ते हुए और आहिस्ता से—मैं पट्टे के बंधन से सरकता गया और शंशेरी की पहुँच से बाहर निकल आया। कम-से-कम, क्षणभर के लिए *मैं आजाद था।*

आजाद!—लेकिन मैं अभी भी इन्क्विजिशन के चंगुल में था! मैंने मुश्किल से खौफनाक लकड़ी के बिस्तर से नीचे उतरकर कैदखाने की पत्थर की फर्श पर कदम रखा था, जब उस *नारकीय मशीन* की गति रुक गयी, और मैंने उसे किसी अदृश्य ताकत द्वारा वापस ऊपर छत की तरफ जाते हुए देखा। यह एक सबक था, जिसे मैंने निराश होकर अपने दिल में संजो लिया। निस्संदेह मेरी हर हरकत पर नजर रखी जा रही थी। *आजाद!*—मैं सिर्फ एक तरह की तकलीफदेह मौत से बचा था, जिसके बाद मुझे किसी दूसरी बदतर मौत के हवाले कर दिया जाना था। इसी विचार के साथ, मैंने

---

[42] लिनेन (Linen)-कथावाचक द्वारा सर्ज के लिबास के भीतर पहना गया कपड़ा।

[43] चूहे

बेचैनी से अपनी आँखें हर तरफ मुझे घेरने वाले *लोहे के अवरोधों*[44] की ओर घुमाई। यह सुस्पष्ट था कि *कोई असामान्य चीज—कोई तब्दीली*, जिसे मैं पहले, स्पष्ट रूप से नहीं समझ पाया था—कमरे में आ चुकी थी। ख्वाब-जैसी और दहलाने-वाली *कल्पना* के कई मिनटों के दौरान, मैंने खुद को व्यर्थ की असंगत अटकलबाजी में उलझाए रखा। इस अवधि में, मुझे पहली बार कोठरी को रोशन करने वाली *नारकीय* रोशनी के स्रोत का पता चल गया था। यह रोशनी एक दरार से निकल रही थी, जो लगभग आधे इंच चौड़ी थी। यह दरार पूरे कैदखाने में दीवारों के आधार पर, हर तरफ फैली हुई थी। वे दीवारें इस रोशनी की वजह से दिखती थी और फर्श से पूरी तरह अलग थीं। मैंने छेद के दूसरी तरफ देखने की कोशिश की, जो स्वाभाविक रूप से नाकाम रही।

जब मैं अपनी कोशिश करने के बाद उठा, कमरे में होने वाले परिवर्तन का रहस्य तुरंत ही मेरी समझ में आ गया। मैंने यह गौर किया कि यद्यपि दीवारों पर बनी आकृतियों की रूप-रेखाएँ काफी सुस्पष्ट थीं, फिर भी उनका रंग धुंधला और अस्पष्ट लगता था। इन *रंगों* ने अब एक आश्चर्यजनक और अतिप्रचंड चमक हासिल कर ली थी और उन्होंने ऐसा क्षणभर के लिए किया था। इस चमक ने उन भुतहा और पैशाचिक आकृतियों को ऐसा रूप दे दिया था, जिससे मुझसे ज्यादा दृढ़ साहस वाले लोग भी सिहर सकते थे। एक क्रूर और भयंकर रूह वाली शैतानी आँखें, मेरी तरफ हजारों दिशाओं से घूर रही थीं, जहाँ पहले कोई भी आँख नहीं दिखाई देती थीं। और वे *आँखें*, आग की ऐसी डरावनी चमक से चमक रही थी कि मैं अपनी कल्पना को उन्हें अवास्तविक मानने के लिए मजबूर नहीं कर सका।

अवास्तविक!—जब मैं सांस ले रहा था, मेरे नथुनों में गर्म लोहे की भाप के झोंके आने लगे! एक दम घोटने वाली बदबू कैदखाने में व्याप्त हो गयी!

---

[44] दीवारें जिनपर धातु की चादर चढ़ी थी

मेरी तकलीफों को घूरने वाली आँखों में हर क्षण और ज्यादा गहरी चमक छाने लगी! खून की भयानक तस्वीरों पर और ज्यादा गहरी *लालिमा* खुद को छितराने लगी। मैं हांफने लगा! मैं सांस लेने के लिए हांफने लगा! मुझपर जुल्म करने वालों के इरादों पर कोई संदेह नहीं किया जा सकता था—ओह! वे बहुत जालिम थे! ओह! वे बहुत राक्षसी आदमी थे! मैं चमकती धातु[45] से सहमकर कैदखाने के बीच में आ गया। आग से होने वाली मौत के विचार के बीच में, कुएँ की शीतलता के ख्याल ने मेरी रूह पर मरहम का काम किया। मैं उस कुएँ के जानलेवा किनारे की ओर भागा। मैंने अपनी तनावग्रस्त निगाह नीचे डाली। जलती हुई छत की चमक उसके सबसे गहरे कोनों को रोशन कर रही थी। फिर भी, *उत्तेजना के* क्षण की वजह से, मेरी आत्मा ने मुझे नजर आने वाली चीज का *मतलब*[46] समझने से इनकार कर दिया। बहुत देर बाद यह (मतलब)[47] मेरी आत्मा में जबरन—कड़ा संघर्ष करते हुए घुस आया—और इसने मेरे डगमगाते विवेक को झुलसा दिया। ओह! मैं बोलने के लिए आवाज कैसे निकालता!—ओह! यह खौफ!—ओह! इसके अलावा कोई भी खौफ स्वीकार्य था! एक चीख के साथ, मैं किनारे से भागा और मैंने अपने चेहरे को अपने हाथों से छिपा लिया—और कड़वाहट से रोने लगा।

गर्मी तेजी से बढ़ गयी थी, और एक बार फिर से मैंने ऊपर की तरफ देखा। मैं ऐसे कांपने लगा जैसे कोई तेज बुखार के दौरे से काँपता है। कैदखाने में एक दूसरा परिवर्तन आ चुका था—और अब यह परिवर्तन

---

[45] दीवारों पर लगी धातु की चादर, जो नीचे से निकलती आग की वजह से चमक रही थी।

[46] यह कि भले ही कथावाचक कुएँ में कूद जाता लेकिन इन्क्विज़िटर्स द्वारा छत पर आग लगाने की वजह से वह अपनी मौत को अपने करीब आते देख सकता था क्योंकि कुएँ के अँधेरे कोने भी रोशन हो गए थे।

[47] कुएँ के रोशन होने का मतलब

स्पष्ट रूप से, इसके आकार में था! पहले की ही तरह, क्या हो रहा था—इस बात का अंदाजा लगाने की या इसको समझने की मेरी शुरुआती कोशिश व्यर्थ थी। लेकिन मुझे ज्यादा देर तक दुविधा की स्थिति में नहीं रखा गया। मेरे दो बार बच निकलने से, इन्क्विज़िटर्स के इंतकाम की गति तेज हो गयी थी, और 'खौफों के बादशाह'[48] के साथ अब और खिलवाड़ नहीं किया जा सकता था। अब तक यह कमरा वर्गाकार था। लेकिन, मैंने देखा कि लोहे के बने इसके दो कोण अब 'न्यून कोण' हो गए थे—और परिणामस्वरूप इसके बाकी के दो कोण, 'दीर्घ कोण' हो गए थे। यह डरावना अंतर, एक धीमी घड़घड़ाहट या कराहती हुयी आवाज के साथ, तेजी से और बढ़ गया। एक क्षण में, कमरे का रूप बदलकर समचतुर्भुज हो गया था। लेकिन यह परिवर्तन यहीं तक नहीं रुका—और मैं उसके रुकने की न उम्मीद करता था और न ही चाहत रखता था। मैं उन लाल दीवारों को *चिरनिद्रा के वस्त्र*[49] की तरह सीने से लगा सकता था। "मौत," मैंने कहा, "इस गड्ढे से होने वाली मौत के अलावा मुझे कोई भी मौत मंजूर है!" मूर्ख! क्या मैं नहीं जानता था कि जलते हुए लोहे का मकसद मुझे गड्ढे में जाने के लिए उकसाना था? क्या मैं उसकी चमक से अप्रभावित रह सकता था? या यदि ऐसा था तो भी, क्या मैं उसके दबाव का सामना कर सकता था? और अब, यह समचतुर्भुज कमरा इतनी तेजी से चपटा—और ज्यादा चपटा होता जा रहा था कि मुझे सोचने का बिलकुल वक्त नहीं मिला। इस कमरे का मध्यभाग, और बेशक, इस कमरे की विशाल चौड़ाई बिलकुल उस मुंह बाए गड्ढे पर आ गई थी। मैं सहमकर पीछे हो गया—लेकिन

---

[48] खौफों का बादशाह (King of Terrors)-यह मौत के लिए अलंकार है। इस उल्लेख को बाइबिल से लिया गया है जिसके Job18:14 में ईश्वर द्वारा दुष्टों को सजा दिए जाने के सम्बन्ध में कहा गया है, "उसे उसके तम्बू की सुरक्षा से निकाल लिया गया और उसे खौफों के बादशाह के सामने ले जाया गया।" अब चूँकि कथावाचक को इन्क्विज़िटर्स द्वारा विधर्मी पाया गया है, उसे मौत के लायक माना गया है।

[49] कफन के लिए अलंकार

करीब आती दीवारें मेरी विरोध करने की क्षमता को दबाते हुए मुझे आगे धकेल रही थीं। आखिरकार, कैदखाने की ठोस फर्श पर, मेरे झुलसे हुए और कसमसाते शरीर के लिए पाँव टिकाने की एक इंच की जगह भी नहीं बची थी। मैंने अब और संघर्ष नहीं किया, लेकिन मेरी रूह की पीड़ा ने हताशा की एक ऊंची, लम्बी और आखिरी चीख में सांत्वना पाई। मैंने महसूस किया कि मैं कुएँ के किनारे पर लड़खड़ा रहा था—मैंने अपनी आँखें फेर लीं—
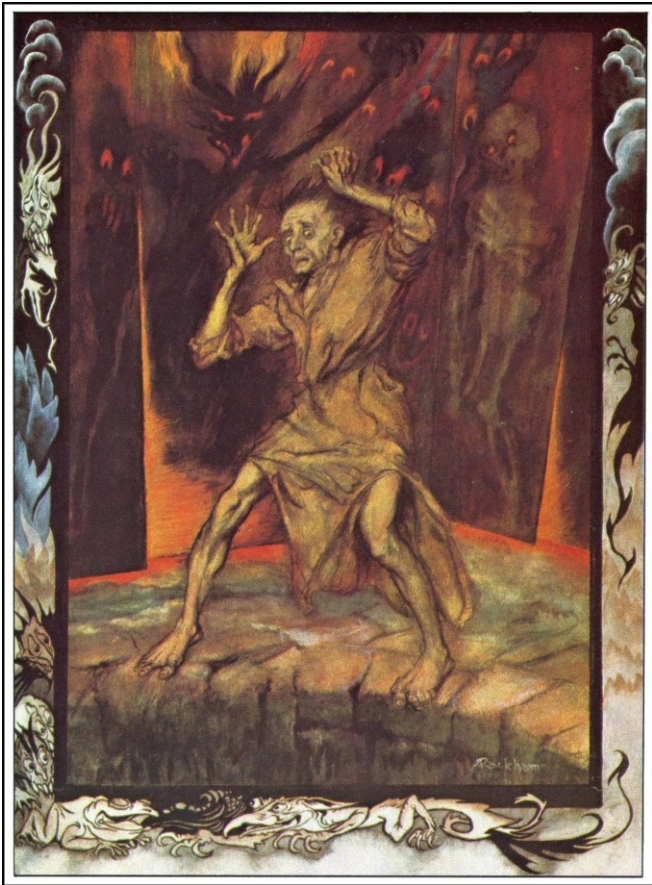
तभी वहाँ इंसानी आवाजों की बेमेल भिनभिनाहट सुनाई देने लगी! कई तुरहियों की नाद जैसा शोर हुआ! हजारों बिजलियों के कड़कने जैसी कर्कश रगड़ने की आवाज हुई! धधकती दीवारें तेजी से पीछे हटने लगीं! जैसे ही मैं, बेहोश होकर उस गहरे गड्ढे में, गिरने वाला था, एक बाँह ने बढ़कर मुझे थाम लिया। यह जनरल लेसाल की बाँह थी। फ्रांसीसी सेना टोलेडो में प्रवेश कर चुकी थी। अब इन्क्विजिशन अपने दुश्मनों के शिकंजे में आ चुका था।[50]

***

[50] कथा में बताया है कि दुश्मन सेना ने इन्क्विज़िटर्स पर हमला करके टोलेडो पर कब्ज़ा कर लिया और कथावाचक को बचा लिया गया। यह उल्लेख पेनिन्सुलर युद्ध (1808-1814) का है जिसमें स्पेन ने इंग्लैंड की मदद से नेपोलियन प्रथम के अधीनस्थ फ्रांस के विरुद्ध विद्रोह किया था। इस युद्ध के दौरान, लेसाल के काउंट जनरल कोल्बेर्ट और उनकी सेना ने टोलेडो पर आक्रमण किया था।